महाराजकृष्ण भरत

आज जम्मू बंद है

वे आते हैं बेरोक-टोक
भेदते हमारे सुरक्षा कवच को
रसोईघर से शयनकक्ष तक
रौंदते हैं हमारे जीवन की हर खुशी
परोस देते हैं भोजन की थालियों में
ए.के.-४७ राइफलों की गोलियाँ
चूल्हे की आँच पर अधपके भोजन में
गिरा देते हैं हथगोले
भूखे पेट ही सदा के लिए सो जाते हैं—
खाट पर फटेहाल सुस्ताते
दिहाड़ी मजदूर और उनके बच्चे।

अम्मा रसोईघर में
खुद ही पक रही है
खून से लथपथ है शिवलिंग का
पावन स्थल
साधुओं के वेश में झुग्गी बस्ती में
घुस आए हैं
बहुरुपिए।

चीत्कार कर जीवंत हो उठते हैं
हमारे सामने
नरसंहारों के अनेकानेक मर्मांतक दृश्य
कोसती हैं हमें
संग्रामपुरा, वंदहामा, छट्ठीसिंहपुरा
पर्णकोट, रघुनाथ मंदिर
रेलवे स्टेशन
कालूचक बस हत्याकांड
की भटकती आत्माएँ।

हम हड़ताल का आह्वान कर
पा लेते हैं संतोष
हमने हत्यारों पर पा ली है विजय।

इससे पहले
मुशर्रफ के जलाए जाएँ
पुतले
शहर में कर्फ्यू का
सायरन बज जाता है।

आते हैं हमारे संरक्षक
हर हत्याकांड के बाद
यही कहते विदा होते हैं
हमने जाँच कमेटी का कर लिया है गठन
धर दबोचा जाएगा नरभक्षियों को।

अब भी जारी है हत्याकांडों का यह क्रम
नकाबपोशों को मिले हैं अधिकार
किसी भी लौ को बुझाने के
और संसद् मौन है
१३ दिसंबर के बाद भी।

□

मिश्रीवाला विस्थापित कैंप

माँ परोस रही थी खाना
बच्चे माँग रहे थे पानी,
बरसात के मौसम में
बूढ़ा पसीने में निचोड़ रहा था कपड़े
देख रहा था टकटकी आँखों से
कूलर के पंखों का ठहराव,
लोकतंत्र में अपराध है
बिजली-पानी की माँग करना।

माँगो चाहे जितनी भी 'ऑटोनामी'
'होम मिनिस्टर' की बेटी के बदले
कितने ही आतंकवादी
पर मत माँगो बिजली-पानी।

तुम्हारा पानी कैद है बिसलरी की बोतलों में
जो पिलाया जाता है आतंकवादियों को
दिल्ली से कंधार के सफर तक
बिजली हर बार तुम्हारी छत पर
ही तो गिरी है।

भेजे जाते हैं मध्यस्थ
तुम्हारे पास नहीं
नकाबपोशों के यहाँ
तुम्हारे भविष्य का फैसला करने,
जहाँ अँधेरा हो
वहाँ अपराध है सुबह की बात करना।

जिनकी हर निगाह पर
बहा करती थीं कई नदियाँ
हर कदम पर जलप्रपातों का स्वर
गुंजायमान हुआ करता था
जिनके घरों तक चिनार जैसे विशाल वृक्ष
पंखा झूला करते थे,
वे ही आज एक बूँद पानी के लिए
तरस रहे हैं
ठंडी बयार के लिए घुट रहे हैं
बदले में पा रहे हैं
पुलिस की लाठियों के प्रहार।

ऐ व्यथ*!
आज मीलों दूर तुम
बहती हो
हमारे दिलों में
बहती रहोगी
हर पल।

□

शारदा कॉलोनी-४८/६,
पटोली ब्राहमणा, मूट्ठी,
जम्मू-१८१२०५

* वितस्ता नदी।